गीना देवी शोध संस्थान
द्वारा श्रीगंगानगर, राजस्थान से प्रसारित
साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध का अंतर्राष्ट्रीय मासिक
Impact Factor : 4.553
ISSN : 2321-8037
जनवरी-फरवरी 2024
Vol. 12, Issue 1-2

Gina Shodh SANGAM

Peer Reviewed & Refereed Research Journal

International Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

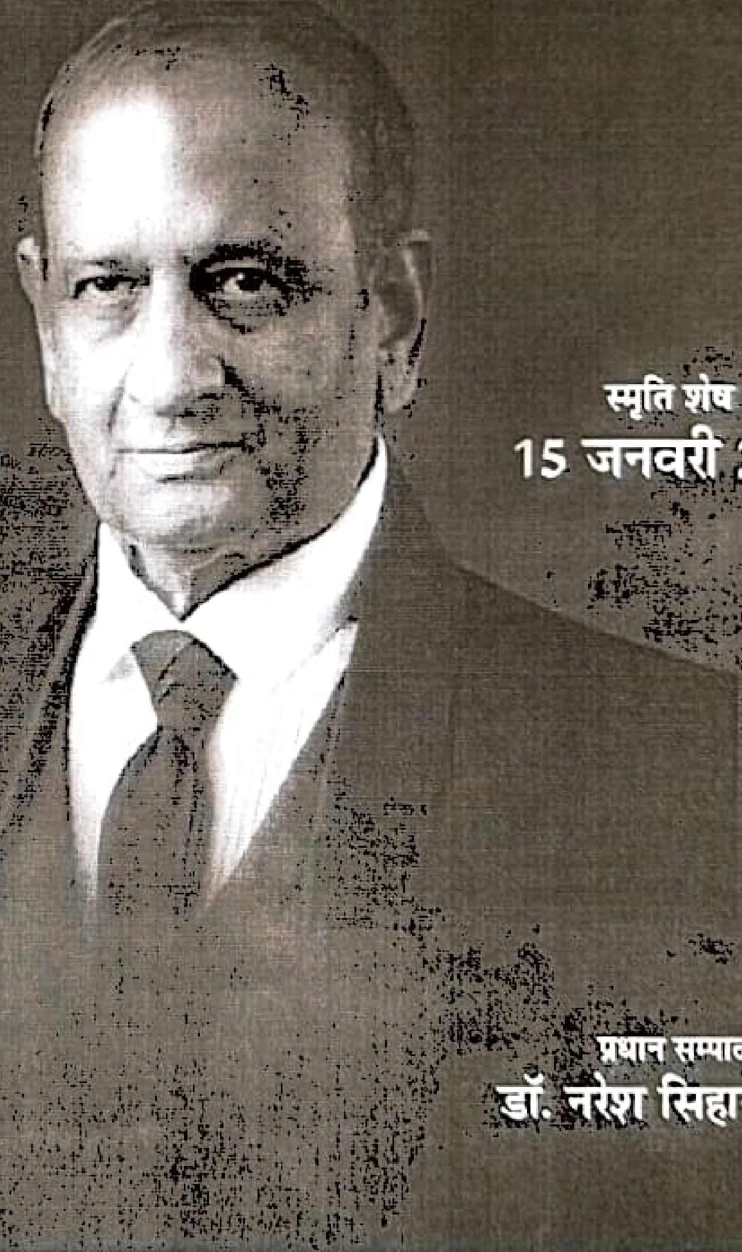

जन्म :
26 अगस्त 1955

स्मृति शेष :
15 जनवरी 2024

संपादक :
डॉ. रेखा सोनी

प्रधान सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

अनुक्रमाणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. रेखा सोनी	6–6
2.	मत्स्य महापुराण के सुभाषितों से प्राप्त शिक्षा	डॉ. शैलजा रानी अग्निहोत्री	8–13
3.	**Role of Environmental Education in Teacher Education**	**Dr. Savita Bhandari**	**14-20**
4.	**GURDWARA REFORM AGITATION (1920-25) : ANALYSIS OF ITS 'HISTORICAL' LITERATURE**	**Dr. Harwinder Kaur**	**21-29**
5.	तेजाजी से संबंधित लोक साहित्य में पेड़ पोधों का चित्रण	शिम्भुराम	30–34
6.	"मैं आजाद हूं" – चंद्रशेखर आजाद	डॉ. दुर्गेश कुमार शर्मा	35–39
7.	हरमहेन्द्र सिंह बेदी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	सुमन लता, डॉ० अजयपाल सिंह	40–45
8.	हबीब तनवीर और चरनदास चोर	नीता वर्मा	46–49
9.	उत्तर प्रदेश में बढ़ते पर्यटन विकास की चुनौतियां और समाधान	डॉ. वेदप्रकाश	50–59
10.	झज्जर जिले की आर्थिक उन्नति में कृषि आधुनिकीकरण की भूमिका का विश्लेषण	रेनू	60–64
11.	रत्नकुमार सांभरिया के 'साँप' उपन्यास में खानाबदोश जीवन	शिल्पा बाबु, डॉ. जयलक्ष्मी पाटील	65–67
12.	**Job Stress, Job Satisfaction and Mental Health among Physical Education Teachers working in government schools of Rajasthan in relation to demographical variables**	**Bhawani Singh, Dr Surjeet Singh Kaswan**	**68-75**
13.	**Role and Impact of Good Governance in Sports Development in India**	**Sukhjeet Singh, Dr Surjeet Singh Kaswan**	**76-78**
14.	রবীন্দ্রগল্প 'পোস্টমাস্টার' ও নিত্যানন্দ মুখোপাধ্যায়ের 'বার্তাগৃহাধ্যক্ষবচঃ' নাটক: একটি তুলনাত্মক পর্যালোচনা	গবেষক – সুব্রত অধিকারী	79–89
15.	भारत के आर्थिक एवं सामरिक क्षेत्र में महिलाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. सुषमा पाठक, मीना श्रीवास्तव	90–93
16.	मालती जोशी की कहानियों के परिप्रेक्ष्य में वृद्ध	**E. JACQUELINE, Dr. ANURADHA PAKALAPATI**	**94-100**
17.	लैगिंक असमानता का व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव	प्रवीण कुमार जाखड़, अनुराधा चौधरी	101–105

संगम Impact Factor : 4.553 Website : www.ginajournal.com ISSN : 2321-8037
SANGAM
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal Vol. 12, Issue 1-2
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक पृष्ठ : 94-100

मालती जोशी की कहानियों के परिप्रेक्ष्य में वृद्ध

E. JACQUELINE, Research Scholar, (UP21G9651001)
Dr. ANURADHA PAKALAPATI, Assistant Professor & Research Supervisor,
Department of Hindi, School of Languages,
Vels Institute of Science, Technology and Advanced Studies (VISTAS)

सारांश :-

मानव विकास के सतत प्रक्रिया में एक है 'वृद्धावस्था'। मनुष्य जीवन में गर्भावस्था, शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था, वृद्धावस्था आदि मानव विकास की अवस्थाएँ पार करते हैं। उनमें बुढ़ापा वरदान है जैसे स्वर्णयुग की तरह होता है। वे ज्ञान और अनुभव से भरपूर परिपक्वता पूर्ण भंडार हैं। जीवन की जटिलता और विषमता के मार्गदर्शक हैं। देखने में वृद्धावस्था, माथे पर ज्ञान की रेखाएँ, सिकुड़ता हुआ बदन, काम करने में शिथिलता, यादों का भंडार, गौरव जीवन की अवशेष आदि से भरपूर हैं। जैसे मनुष्य बचपन में दूसरों पर आश्रित होते रहते हैं वैसे बुढ़ापे में भी दूसरों की सहायता रहित जीना असंभव है। लगातार उनके मन में कुछ विचार का प्रवाह बहते रहते हैं तुरंत उसे आस–पास रहने वालों से साझा करने को पसंद करते हैं। जीवन साथी हो तो एक दूसरे से विचार विमर्श करते हैं। समय के अभाव के कारण नई पीढ़ी इनसे भाग कर पुराने विचार एवं लोगों को अपने जीवन का हिस्सा बनाने से कतराते हैं। मान–सम्मान की अपेक्षा करनेवाले बूढ़े लोग अपने ही परिवार का अनादर देखकर टूट जाते हैं। इसी कारण कई कष्ट भोगना पड़ता है। इक्कीसवीं सदी की महिला कहानीकारों ने अपनी कहानियों में परिवार में वृद्धों की स्थिति का चित्रित किया है। इनमें श्रीमती मालती जोशी की कहानियों में वृद्धावस्था के बारे में उनकी परिप्रेक्ष्य को इस आलेख के जरिए देखेंगे।

मूल शब्द :- वृद्ध, मार्गदर्शन, वृद्धावस्था, शिथिलता, शरीरिक–मानसिक कमजोरी, परावलंबन, अवहेलना, अवलंबन, संघर्ष, अकेलापन।

प्रस्तावना :-

मनुष्य अपने जीवन विकास की सभी अवस्थाओं को पार करके सारे कर्तव्य निभाने के बाद आराम लेने वाले श्रेष्ठ अवस्था वृद्धावस्था है। मनुष्य सात अवस्थों में पहले चार को माता–पिता पर निर्भर रहना आवश्यक है, वैसे वृद्धावस्था में दूसरों की सहायता आवश्यक है। इस अवस्था में हरपल कष्टप्रद, ऊर्जाविहीन और समस्याजनक होती है। इस अवस्था में व्यक्ति मन और शरीर दोनों की आराम देना आवश्यक है। इस अवस्था में मन की एक ओर पुरानी हरियाली यादें बार–बार चबाकर आनंद की लहरें जैसे झुल–झुलाते हैं तो दूसरी ओर

जीवन का अंतिम समय की अकेलापन दुःख देती है। इस अवस्था को ध्यान और हठयोग साधन द्वारा आसान से बिता सकते हैं। मालती जोशी, शशीप्रभा शास्त्री, राजी सेठ, सुधा अरोड़ा, सूर्यबाला, नासिरा शर्मा महरुन्निसा पर्वेज, अलका सरावगी आदि कई कहानीकारों ने अपनी कहानियों में वृद्धों का चित्रण किया है। इन कहानियों का अध्ययन करते हुए वृद्धों की सहिष्णुता, मानसिक कमजोरी, शिथिलता, शारीरिक कमजोरी, अकेलापन, मरण का भय, आपसी बिछुड़न, संघर्ष, उपेक्षा, सत्ता, हठवादिता, स्वार्थी प्रवृत्ति, समझदारी आदि वृद्ध जीवन के कई पक्ष हमारे सामने आते हैं।

मालती जोशी की कहानियों में वृद्ध :-

मालती जी अपनी कहानियों में मध्य वर्ग पारिवारिक पृष्ठभूमि के साथ–साथ वृद्धों को भी भूमिका देती हैं। बच्चे काम की वजह घर से बाहर निकलना पड़ता है या नए बहू बेटे को अलगाव करके घर से बाहर जाते हैं। ऐसे समय माता–पिता को घर में अकेले छोड़कर जाते हैं। इसका फलस्वरूप वृद्ध लोग दुःख भोगना पड़ता है। बेटा–बेटी अपनी बच्चों को माता–पिता से देखभाल के लिए छोड़ देते है तो वे आराम लिए बिना सबकुछ सहते हैं। बच्चे विदेश में रहें तो माता उनके लिए सभी चीजें इकट्ठे करके यहाँ से वहाँ भिजुवाती है। बुजुर्ग परिवार में किसी कठिन परिस्थिति में परिपक्व निर्णय लेते हैं। वे परिवार में बच्चों को परेशानियाँ आते वक्त अच्छे मार्ग दिखाकर सहयोग देते हैं। कछ बूढ़े लोग स्वयं की स्वार्थ प्रवृत्ति और हठवादिता से अपने जीवन गुजारते हैं। इन सभी का प्रसंग मालती जोशी का कहानी–संग्रह 'एक घर हो सपनों का', 'रहिमन धागा प्रेम का', 'वो तेरा घर ये मेरा घर', 'स्नेहबंध', 'महकते रिश्ते' आदि में अधिकांशतः उपलब्ध हैं। बुढ़ापे के बारे में स्वाति तिवारी का कथन है "वृद्धावस्था जीवन का सामान्य घटनाक्रम है एवं प्राकृतिक सन्तुलन की अनिवार्यता भी। शरीर के विभिन्न अंगों की संचित कार्य क्षमताओं में धीरे–धीरे होनेवाली कमी से सम्बन्धित है।[1]"

वृद्धों की सहिष्णुता भाव :-

समाज में सहनशीलता होता है तो मनुष्य अपने जीवन में खुशी से रह सकते हैं। इसके लिए 'स्वयं' (स्वयं का अर्थ स्वार्थ) को छोड़कर जीना जरूरत है। सहनशीलता लोगों को अपने नियति पर चलते हुए अपने दृष्टिकोण, जीवनशैली और व्यवहार को समझने की अनुमति देती है। जब व्यक्ति बूढ़े होते हैं तब उनहें मानसिक और शारीरिक आराम की आवश्यकता होता है। बुजुर्ग जब बेटा–बेटी काम की वजह से दूसरी जगहों पर निवास करते हैं तब उनके बच्चों का पालन–पोषण में सहयोग करते हैं। बेटे–बेटी माँ–बाप की इच्छा का परवाह नहीं करते हैं। आराम लेने वाले उम्र में उनको बच्चों के पीछे दौड़ना, उनसे खेलना, खाना खिलाना आदि मुश्किल होता है। इसका प्रसंग मालती जोशी की कहानी "ये कहाँ आ गए हम" के अनुसार अमृता हमेशा काम की वजह से विदेश जाना पड़ता है। तब उसके बच्चों को अपनी माँ के पास छोड़कर चली जाती है। अमृता की माँ बूढ़ी होते हुए भी बिना आराम कर अमृता के बच्चों की देखे–रेख में व्यस्त रही हैं। इसे मालती जी अमृता की माँ का विचार द्वारा अभिव्यक्त करती हैं "शायद इसीलिए उस रात मैं सारी चिंताओं से मुक्त होकर घोड़े बेचकर सोई थी। कार्तिक ठीक कहता है, अब मेरी उम्र बच्चे पालने की नहीं है। जब अपने बच्चे पालते हैं तो शरीर में शक्ति होती है, मन में उमंग होती है। नाती–पोतों को थोड़ी देर को खिलाना और बात है। पर माँ बनकर पालना बहुत मुश्किल है। यह मुश्किल काम मैं साल भर से कर रही थी। एक नहीं, दो–दो बच्चों की सार–सँभाल कर रही थी। इसीलिए बेहद थक गई थी।[2]" सहनशीलता के कारण वे अपने फुरसत समय को बेटा–बेटी और पोता–पोती के

लिए त्याग कर देती हैं।

स्वार्थ विहीन वृद्ध :-

समाज में लोग दूसरों की भलाई के लिए अपने सब कुछ त्याग करते हैं। इस कतार में पारिवारिक माँ–बाप, कुछ सास–ससुर आ सकते हैं। इसका संदर्भ हमें मालती जोशी की कहानी "यशोदा माँ" के अनुसार जैसे पुराण में होने वाली यशोदा श्रीकृष्णा को हमेशा खाना खिलाती रहती है वैसे इस कहानी में भी माँ अपने बेटे के लिए बड़े होने पर भी उनका खान–पान का ध्यान रखना चाहती है। बेटे विदेश में होने पर भी उसका पसंदीदा खान–पान, बहू के लिए साड़ियाँ, मसाले और पोता–पोती के लिए थैलियाँ आदि सब कुछ बनाकर भेजती है। आजकल यहाँ के सभी चीज विदेश में मिलता है। माँ अपने संतुष्टि के लिए बच्चे इनकार करने पर भी भिजवाती हैं। इसे उल्लेख करते हुए बाप ने कहा "वह बेवकूफ औरत इसीलिए जिंदा है कि पोते–पोतियों के पोतड़े सीती रहे, बहू की रसोई के लिए मसाले कूटती रहे, बेटे के लिए मठरी और खुरमे बनाती रहे। मैं आजकल क्या करता हूँ, पता है? जब सामान देने जाता हूँ तो उन बच्चों से कह देता हूँ कि अगर तुम्हारा सामान ओवरवेट होने लगे तो सबसे पहले यह पार्सल उठाकर फेंक देना, हमें बताने की भी जरूरत नहीं है और वहाँ अगर कोई पंद्रह दिन तक सामान लेने न पहुँचे तो सब खा–पी कर खत्म कर देना, जरा भी संकोच मत करना[3]। और ननद कहती है "यह सारा जतन वे बेटे के लिए नहीं, अपने लिए कर रही हैं। उनके लिए जीने का बहाना है यह। जीजा जी ठीक कहते हैं, जिस दिन यह बहाना नहीं रहेगा, वह मर जाएँगी।[4]"

परिपक्व निर्णय :-

मशीनीकरण के कारण सारी दुनिया की गतिविधियाँ बहुत तेजी से चल रहा है। इसके अनुसार समस्याएँ भी अधिक हो रहा है। उन समस्याओं के लिए उचित निर्णयन लेने के लिए परिपक्वता महत्त्वपूर्ण होता है। परिवारिक जीवन में कई बार अनेक कठिन समस्यएँ और गंभीर स्थितियों को सामना करना स्वभाविक है। तभी अनुभवपूर्ण वृद्ध लोग उचित सुझाव देकर अच्छा रास्ता दिखाते हैं। बच्चे काम की वजह से विदेश गएं तो वृद्ध लोग अपने मानसिक और शारीरिक स्वस्थय पर ध्यान रखते हैं। आजकल अधिकतर बच्चे विदेश में काम करते हैं। यह वर्तमान समय का प्रवृत्ति है। इसलिए बुजुर्ग लोग आत्मनिर्भर रहना और खुद देख–रेख करने की तैयारी में रहते हैं। मालती जोशी की कहानी "प्रलय के बावजूज" में इसका जिक्र मिलता है। इसके अनुसार आभा और आलोक दोनों विवाह के बाद विदेश में काम करते हुए जीवन बिता रहे हैं। दोनों के जीवन विदेश में खशी से चलाने से उनके माता–पिता राहत से जीवन बिता रहे हैं। हमेशा उनके माता–पिता आपस में एक दूसरे से मित्र–भाव से आदान–प्रदान करके जीवन गुजार रहे हैं। पर एक दिन आभा और आलोक किसी कारण वश अलग हो जाते हैं। इस विषय आभा के माँ–बाप को ही पहला पता चलता है तो वे बहुत दुखी होते हैं। उस दिन आभा के माँ–बाप की शादी की सालगिरह मुबारक अदा करने के लिए आलोक की माँ आते हैं। तब अपने बच्चों के तलाक का विषय जानकर उनका मन स्तंभित हो जाता है। बहू आभा अच्छी लड़की होने के कारण अपने संपत्ति को आभा–आलोक के बच्चे के नाम पर लिख देने की परिपक्व निर्णय लेती है। इस निर्णय से आभा के माता–पिता इनकार कर देते हैं। इसके बारे में आलोक की माँ का कथन है "नहीं, मैं अपने पूरे होशोहवास में हूँ। आज की शाम में वाकई उन खशकिस्मत बच्चों के नाम करना चाहता हूँ, जो जन्म लेने की जहमत से बच गए। हम चाहें तो एक–दूसरे को इसके लिए बधाई भी दे सकते हैं।[5]"

मार्गदर्शन व परामर्श :-

वर्तमान समाज में आधुनिक युवा पीढियों को मार्गदर्शन देना परमावश्यक है। इसे पूर्ती करने के लिए हमें बुजुर्ग लोगों का अनुभवभरी जीवन और मार्गदर्शन मदद करता है। इसलिए बुजुर्ग बच्चों को मार्गदर्शन देकर उन्हें भविष्य की समस्याओं को हल करने में मदद करते हैं। वे व्यक्तिगत, सामाजिक, भावनात्मक एवं व्यवसायिक विकास के लिए रास्ता दिखाते हैं। परिवार में बुजुर्ग अपने बच्चों को बोझ न रहकर मार्गदर्शक बन जाते हैं एवं उनकी सुखदायक जीवन के लिए नींव डालते हैं। पारिवारिक गंभीर स्थितियों में वे अपने अनुभवों से हल करते हैं। इसका उल्लेख मालती जोशी जी की कहानी "तुम मेरी राखो लाज हरि" के अनुसार संध्या युवा विधवा है। उसके पति शहीद है। संध्या के पति की मृत्यु के बाद अपनी मायका में रह न सकी। इसलिए वह अपनी ससुराल में रह कर कॉलेज और कम्प्यूटर क्लास जाकर अपना जीवन गुजार रही है। घर की जिम्मेदारियाँ सास संभालती है। बाहर का कार्य ससुर संभालते हैं जैसे संध्या को कॉलेज और कम्प्यूचर क्लास ले जाना और वापस घर ले आने का जिम्मेदारी ससुर का है। सास–ससुर दोनों उसको अपनी बेटी की तरह देख–भाल करते हैं और अपनी बहू की सुख के लिए सब कुछ त्याग कर देते हैं। संध्या अपने पति की मृत्यु के बाद कोई सुभकार्यों में भाग नहीं लेती है अगर भाग लेती है तो अपशकुन करके दूसरों की निंदा का पात्र बन जाती है। पर सास–ससुर दोनों उसे बोझ न समझ कर उसी लिए दूसरा विवाह कर पर विचार वीमर्श करते हैं। ससुर पिता के स्थान पर रह कर कन्यादान करके उसके प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने का इरादे में हैं। इससे संबंधित सास का कथन है "मन में एक ही बात थी कि अब किसके लिए जोड़ना है। संध्या के पास तो सरकार का और समाज का दिया बहुत है। जिंदगी आराम से कट जाएगी। वैसे भी उसका एम.ए. पूरा होते न होते हम लोग उसकी शादी की सोच रहे थे। हमीं लोग कन्यादान करेंगे। भाई नहीं रहा तो क्या हुआ, सविता के लिए एक बहन तो हो जाएगी।[5]"

नई-पीढ़ी को वृद्धों की सहयोग :-

आज के मशीनीकरण दुनिया में मनुष्य में समझ की अभाव के कारण ही जीवन जीने के लिए काम के पीछे–पीछे दौड़ कर रहा है। इसी कारण उनको थोड़ा आराम लेने और पास बैठकर बात करने का समय नहीं हाता। पर बूढ़े लोग अपने अनुभव के कारण बच्चों के हालत समझकर उसके अनुसार जीवन गुजार रहे हैं। बच्चों के मशीनीदौड़ में उनके कार्यभार समझकर बुजुर्ग यथासंभव घर के काम में बेटे–बहू की सहयोग देते हैं। इसका आधार मालती जोशी की कहानी "एक सार्थक अहसास" में मिलता है। इस कहानी के अनुसार विनोद की पत्नी कामकाज करने वाली बहू है। दोनों आपस में अकसर किसी विषय पर झगड़ा करते रहते हैं। इस हालतों को देखते हुए विनोद के विधुर पिताजी बहुत दुखी होते हैं। बेटा–बहू के झगड़ा में झांकने–सलाह देने को वे तैयार नहीं हैं। वे घर में बहू को यथासंभव उतनी सहायता करते हैं फिर भी वे अकसर मन में घर की बोझ समझते रहते हैं। पर बहू उनको घर की मुखिया का स्थान देती है। जब विनोद नौकरी छोड़ देता है तो तब से घर का सारा खर्च विनाद की पत्नी ही देख रही है। इस असहज वातावरण को समझकर ससुर अपने दुखी बहू को आश्वास्त करके "जो हो गया, सो हो गया, अब हिम्मत से और शांति से काम कर लो। चिंता करने की जरूरत नहीं है, मैं हूँ न तुम्हारे साथ।[6]"

अकेलापन :-

मनुष्य सामाजिक प्राणी है फिर भी आमतौर पर आधुनिक समाज में बूढ़े लोगों की अकेला जीवन

ज्यादातर पाया जाता है। यह एक बीमारी की तरह समाज को बिगाड़ रहा है। परिवार में बेटा–बेटी काम की वजह से स्थानांतरण करते हुए जाने से वृद्ध लोग अकेले हो जाते हैं। अधिकतर घरों के बेटे और बेटियाँ विदेश में रहते हैं। आज के जमाने में एक नई प्रवृत्ति बन गई है। बूढ़े लोग घर में अकेले रहते हैं नहीं तो उनको वृद्धाश्रम में डाल देते हैं। इसी कारण उनके तन और मन अस्वस्थ हो जाता है। इसका चित्रण मालती जी की कहानी "साँझ की बेला, पंछी अकेला" के आधार पर कुमार साहब काम की वजह से अपने गाँव छोड़कर पत्नी और बेटे सचिन के साथ शहर में आकर बड़े बंगलो में रहते हैं। अब उनका बेटा बड़ा होकर काम के कारण विदेश चला जाता है तो घर में सन्नाटा छा जाता है। कुमार साहब अपनी विधवा माँ को गाँव में छोड़कर आते वक्त उनका मन जिस तरह अकेलापन की वेदना में तड़पता है अब उनका बेटा विदेश जाने के बाद उसी वेदना खद महसूस करते रहते हैं। अकेलापन की वेदना को कुमार साहब की पत्नी की कथन में "अगर पता होता कि आखिर में हमीं दोनों को रहना है तो इतना बड़ा बँगला क्यों बनवाते ? अपने लिए तो दो कमरे काफी होते।"

शारीरिक-मानसिक कमजोरियाँ :-

जीवन वहीं सफलदायक है जिसमें व्यक्ति अपने पद का उत्तरदायित्व को समझता है। मानव आधुनिकता की आँधी दौड़ में अपने कर्तव्य को भूलकर चल रहा है। पहले पहल मनुष्य संयुक्त परिवार में रहते हैं तो वृद्धाश्रम का जरूरत नहीं पड़ता है। पर परिवर्तित पारिवारिक स्वरूप के कारण आज अधिक संख्या में वृद्धाश्रम बढ़ रहा है। क्योंकि काम की वजह से आज की पीढ़ी गाँव से शहर और शहर से विदेश की ओर प्रस्थान कर रहे हैं। बुजुर्ग अपनी पूरी जिंदगी अपने बच्चों के पालन–पोषण करने में गुजारते हैं। जब वे अंतिम समय पहुँचते हैं तब वे पूरी तरह शारीरिक व मानसिक कमजोरियाँ के जकड़ में आ जाते हैं। व्यक्ति अपने भाव और विचारों को औरों से साझा करने वाली प्राणी है। जब इसका अभाव होता है तब वे मानसिक रोगी बन जाते हैं। तत्पश्चात शय्याग्रस्त हो जाते हैं और दूसरों की आश्रय में रहना पड़ता है। इसका संदर्भ हमें मालती जी की कहानी "विश्रांति" के मुताबिक विमल घर के बड़े बेटे होने के कारण उसके माता–पिता उनके साथ रहते हैं। पिताजी के पेंशन आ रहा है। पिताजी बीमार के कारण बहुत कष्ट भागना पड़ता है। उनके यहाँ इलाज के अभाव के कारण शहर में अपने बेटी बेला के घर में रहकर चिकित्सा करने के लिए जाते हैं। एक महीने बेटी के यहां रहकर इलाज करने के बाद घर की बुरी वातावरण बताकर वह अपने माता–पिता को छोटे भाई कमल के घर भेज देती है। कमल की पत्नी आठ दिन तक उनकी सेवा–सुश्रुषा करती है। फिर वह भी सेवा करने और खाना देने के लिए मना कर देती है तो पिताजी अपनी पत्नी सावित्री से बोले "सावित्री, अब बुढ़ापे में मेरी मिट्टी और खराब मत करो। अपनी बची–खची इज्जत लेकर घर लौट चलो।"

स्वार्थ प्रवृत्ति :-

हर मनुष्य के गुण में स्वयं के कारण स्वार्थ प्रवृत्ति का भाव उत्पन्न होता है और यह स्वार्थ प्रवृत्ति हठवादिता का कारण बन जाता है। बूढ़े लोग अपने बुढ़ापे में किसी के लिए अपने नीति–नियमों को और आचरणों को बदलना पसंद नहीं करते हैं। तत्पश्चात् वे परिवार में नए आए बहू को उन्हें समझने की मौका नहीं देते हैं। इस स्वभाव को मालती जोशी अपने पात्रों द्वारा कहानियों में प्रतिबिंबित करती हैं। दुनिया में होने वाले हर जीव स्वार्थ भाव से भरी हुई है चाहें जानवर हो या मनुष्य हो। समाज के बुजुर्ग में यह प्रवृत्ति अधिकतर पाया जाता है। 'मुझे' और 'स्वयं' दोनों मानव के जन्म से उनके साथ पैदा होने वाले स्वभाव हैं। यह प्राकृतिक व स्वाभाविक

है। दोनों प्रवृत्तियाँ मनुष्य जीवन को बुरी हालत पहुँचाता है। यह प्रवृत्ति की वजह से परिवार में विभाजन हो जाता है। इस प्रवृत्ति का संदर्भ मालती जोशी की "एक सार्थक अहसास" कहानी में नायक विनाद के पिताजी के मित्र दुबे स्वार्थी है। वे अपने बेटे बहू को घर में साथ रहने नहीं दिया। अपने सुख के लिए अलगाव करके बाहर भेज देते हैं। विनोद के पिताजी से "वे बोले, श्नहीं यार, एक घर में दो चूल्हे अच्छे नहीं लगते। फिर मैं अलग की गृहस्थी बसाऊँ भी तो किसके भरोसे। आपकी भाभी से तो एक बाल्टी भी नहीं उठती। बस, अपना काम खुद कर लेती हैं, यही गनीमत है। और भैया देखो, कल को हाथ–पैरों से लाचार हो गए तो इन्हीं लोगों के पास आना है, फिर नाक कटाने से फायदा। अभी मँझले को थोड़ी सद्‌बुद्धि आ गई है तो लाभ उठा लूँ। वैसे बड़े से कहकर जा रहा हूँ कि हमारा कमरा महफूज रखना, हम कभी भी लौट सकते हैं। दिल्ली की ससुरी हमें न गर्मी सहन होती है, न जाड़ा। कितने दिन निभती है, देखते हैं।[10]"

वृद्धावस्था की चुनौतियाँ :-

वृद्धावस्था मनुष्य जीवन का संध्याकाल कहा जाता है। वृद्धावस्था तक आते–आते मनुष्य का शरीर थक जाता है। वृद्धावस्था कई चुनौतियाँ से भरी हुई है। चुनौतीपूर्ण इस अवस्था को सामना करना बूढ़ों के लिए बहुत मुश्किल लगता है। वर्तमान समय में वृद्ध लोग आर्थिक व शारीरिक सहायता के लिए अपने बेटे–बेटी पर निर्भर रहना पड़ता है। कुछ लोग उनके लिए सेवा–सुश्रुषा करते हैं तो अनेक लोग अपने घरवालों के पक्ष से सहायता न मिलने के कारण अनाथ बन कर सड़क पर खाने–पीने के लिए भटकने की स्थिति आ जाता है। कई बुजुर्ग भावुक होकर अपने वसीयत संतानों के नाम पर कर देते हैं और कुछ बेटे–बेटियाँ जबरदस्ती खुद अपने नाम पर करवा देते हैं। उनको आर्थिक व शारीरिक सहायता के लिए अपने बेटे–बेटी पर निर्भर रहना पड़ता है। इसका का संदर्भ मालती जोशी की कहानी "गृह–प्रवेश" में मनोज अपनी पत्नी कनक के साथ अलग रहने के लिए तैयारियाँ कर रहा है। तब पिताजी की तबीयत ठीक नहीं होने के कारण अपने पिताजी का इलाज होने के बाद घर अलग जाने के लिए सोच रहा है। इलाज का कर्च अधिक होने से पिताजी के दुःख का अहसास बेटी का कथन द्वारा प्रकट करते हैं "मैं अपनी पसीने की कमाई डॉक्टरों पर नहीं लुटाऊँगा। लाख–डेढ़ लाख कम नहीं होता है" और "...मैं बच्चों को टेन्शन नहीं डालना चाहता। न उनके लिए कर्ज छोड़ना चाहता हूँ। दिन–भर बैठे–बैठे माँ को हिसाब समझाते रहते हैं। कहते हैं ग्रेज्यूटी की रकम फिक्स में डाल देंगे। उसका ब्याज आता रहेगा। पेन्शन भी मिलेगी। तुम्हारा काम चल जाएगा। बचचों को परेशान मत करना। पंकज से कहते है—दो साल सब्र से काम लो। फिर तुम अपने पैरों पर खड़े हो जाओगे। तब तक माँ की आय में गुजारा करना। भाइयों के आगे हाथ मत फैलाना। उनहें अपनी भी गृहस्थी देखनी होती है।[11]"

उपसंहार :-

बुजुर्ग अपने वृद्धावस्था के लिए शुरू से ही मानसिक और शारीरिक तैयार होना आवश्यक है। वृद्ध लोग अपने संपत्ति और धन–दौलत को बच्चों के पास सारा सौंप देना आवश्यक नहीं है। अपने लिए एक भाग बचा कर शेष को सौंप देना अच्छा है। बुजुर्ग लोग अपने बुढ़ापे में परिवार वालों को मरण तक किसी न किसी तरह की सहायता करके उनको अपना महत्त्व दिखाना चाहिए। जितना संभव हो उतना उम्र तक कमा करके चलते–फिलते दूसरों को बोझ न रहना जरूरी है। हमेशा दूसरों का परावलंबन बिना रहने का आदत रखना उत्तम है। बुजुर्ग अपने स्वस्थय में भी ख्याल रखना सर्वश्रेष्ठ है। अस्पताल और औषधीय खर्च के लिए कुछ नकद

बचाकर हाथ में रखें तो आपातकालीन खर्च में मदद होगा। बुजुर्ग अपने खाना व्यवस्था में भी सावधान रहना अति उत्तम है। शरीर के लिए अनुचित भोजन को अस्वीकार करना सर्व श्रेष्ठ है। बिना पूछने पर बच्चों को सलाह देना अनावश्यक है। वृद्ध लोग अपने को किसी भी कार्य में व्यस्त रहना परमावश्यक है। पोता–पोती के साथ अपनी अनुभवों को साझा करें तो वह उनके भविष्य के लिए मदद होगा। तभी ही उनका दिमाग नित्य चुस्त रहेगा। वृद्धावस्था में बुजुर्ग जितना संभव हो उतना व्यायाम करना बहुत जरूरी है, क्योंकि वह मात्र ही मन और शरीर दोनों को ताजा रखने की मदद करता है। उनके शरीर को समय के अनुसार आराम देना चाहिए। ये सभी को परिपालन करें तो वृद्धावस्था हमारे लिए बोझ ग्रस्त नहीं सुखदायक से गुजर सकते हैं। ये सभी तत्वों का इशारा मालती जोशी की कहानियों द्वारा हमें व्यक्त किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. तिवारी स्वाति, अकेले होते लोग, वाणी प्रकेशन, नई दिल्ली, 2006, पृ.सं–31
2. जोशी मालती, एक घर हो सपनों का, ये कहाँ आ गए हम, साक्षी प्रकाशन, दिल्ली, 2018 पृ.सं–42
3. जोशी मालती, रहिमन धागा प्रेम का, यशोदा माँ, परमेश्वरी प्रकाशन, 2022 पृ.सं–75
4. वहीं, पृ.सं–76
5. जोशी मालती, रहिमन धागा प्रेम का, प्रलय के बावजूद, परमेश्वरी प्रकाशन, पृ.सं–48
6. जोशी मालती, रहिमन धागा प्रेम का, तुम मेरी राखो लाज हरि, परमेश्वरी प्रकाशन, पृ.सं–89
7. जोशी मालती, रहिमन धागा प्रेम का, एक सार्थक अहसास, परमेश्वरी प्रकाशन, पृ.सं–61
8. जोशी मालती, वो तेरा घर ये मेरा घर, साँझ की बेला पंछी अकेला, किताबघर प्रकाशन, 2018 पृ.सं–19
9. जोशी मालती, महकते रिश्ते, विश्रांति, साक्षी प्रकाशन, 2018 पृ.सं–119
10. जोशी मालती, रहिमन धागा प्रेम का, एक सार्थक अहसास, परमेश्वरी प्रकाशन, 2022 पृ.सं–50
11. जोशी मालती, एक घर हो सपनों का, गृहप्रवेश, साक्षी प्रकाशन, 2018 पृ.सं–66

E. JACQUELINE, Research Scholar, (UP21G9651001)

Dr. ANURADHA PAKALAPATI,

Assistant Professor & Research Supervisor,

Department of Hindi, School of Languages, Vels Institute of Science, Technology and Advanced Studies (VISTAS)

Mail ID : anuradha.hindi@velsuniv.ac.in

Mobile No- : 7299012063

Mail ID : jacquelinejhon@gmil.com

Mobile No- : 9841777187